फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

महीने में एक बार छापते हैं, 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें। पत्र लिखें, मिलें।

नई सीरीज नम्बर 244 1/- अक्टूबर 2008

कुछ बातें जातियों की

गण-कबीला-ट्राइब-क्लैन को सामाजिक संगठन का एक स्वरूप कहा जाता है। मिलते-जुलते रूप में यह मनुष्यों के बीच विश्व-भर में रहे हैं। काफी क्षेत्रों में, बड़ी आबादियों में इनका उल्लेखनीय प्रभाव आज भी देखा जा सकता है।

गण को रक्त-सम्बन्ध से जोड़ा गया। स्त्री और पुरुष के यौन सम्बन्ध कहीं गण के अन्दर ही तो कहीं गण के बाहर ही मान्य रहे। कहीं-कहीं गण के अन्दर और गण के बाहर, दोनों प्रकार के सम्बन्ध सामान्य रहे। हावी-प्रभावी जो बना वह गण के अन्दर ही सम्बन्ध था। किसी को गण में सम्मिलित करने के अनेक तरीके रहे हैं। और, किसी को गण से बाहर करना बहुत बड़ी सजा।

गण के अन्दर और भी गठन हुये जिनमें गोत्र की महत्ती भूमिका रही है। गोत्र को निकट रक्त-सम्बन्ध माना गया और पिता का गोत्र बच्चों का गोत्र बना। वैसे, अगर रक्त की बात करनी ही है तो बच्चों में रक्त माँ के गर्भ में ही बनता है। गण के अन्दर परन्तु गोत्र के बाहर विवाह की प्रथा स्थापित हुई। एक गोत्र वालों के बीच रिश्ते दादा-पिता-बुआ-भाई-बहन-पुत्री-पुत्र वाले। एक गोत्र के लोगों की सँख्या लाखों में होने, दूर-दराज फैले होने पर भी गोत्र वाले नर और नारी के बीच शादी नहीं। सगोत्र विवाह अमान्य। विवाह के बाहर यौन सम्बन्ध अमान्य।

जटिलतायें अनेक हैं और काफी कुछ बदला है पर फिर भी विश्व-भर में विवाह की गण-गोत्र व्यवस्था आज भी उल्लेखनीय है।

आईये अब बात भारतीय उपमहाद्वीप की करें। यहाँ आज भी गण-गोत्र का बोलबाला विवाहों में साफ-साफ देखा जा सकता है। और लगता है कि गणों की पर्यायवाची जातियाँ हैं। गण और जाति शब्द एक ही सामाजिक गठन के लिये.....

गण और वर्ण उच्चारण में निकट लगते हैं परन्तु वास्तव में इनके अर्थ बहुत भिन्न हैं। वर्ण चार हैं और इन्हें अनेक नियमों-उपनियमों के जरिये स्थापित करने के प्रयास हुये। जबकि, गण-जाति उपमहाद्वीप में ही हजारों की सँख्या में हैं। फिर भी, चर्चाओं में अकसर वर्ण और जाति को गड्डमड्ड कर दिया जाता है। आज यहाँ प्रभु वर्ग की मुख्य भाषा, अँग्रेजी में " कास्ट" शब्द का प्रयोग जाति और वर्ण, दोनों के लिये किया जाता है। यह गण-जाति तथा वर्ण के अर्थों को और उलझा देता है।

वर्ण को स्थापित करने के प्रयास समाज में ऊँच-नीच पैदा होने के उपरान्त हुये। वर्ण का अस्तित्व चन्द हजार वर्ष से अधिक का नहीं है। जबकि, गण-जाति रूपि गठन वर्ण के, ऊँच-नीच के अस्तित्व में आने से हजारों वर्ष पहले के हैं।

आईये अब एक नजर गण-जाति पर समाज में हुये, हो रहे व्यापक परिवर्तनों के सन्दर्भ में डालें। बात थोड़ा पहले से आरम्भ करते हैं।

दीर्घकाल तक गण-जाति मौज-मस्ती की अवस्था में रही। उल्लास का बोलबाला रहा। प्रकृति द्वारा उपलब्ध कन्द-मूल भोजन के मुख्य स्रोत थे। पूरक के तौर पर छिटपुट शिकार। समय के साथ कुछ क्षेत्रों में विभिन्न कारणों से इस-उस प्रकार की विशेषता प्राप्त करने की दिशा में कदम बढे। कोई गण मछली पकड़ने में विशेषज्ञ बने तो किन्हीं गणों ने मिट्टी से खेलने में महारत हासिल की। गण-जाति को धन्धे-पेशे से जोड़ने के बीज पड़े। और, भारतीय उपमहाद्वीप में तो गण-जाति को धन्धे-पेशे से जोड़ने वाले यह बीज विराट वृक्ष बने। गण-जाति की जड़ों को धन्धे-पेशे के इस आवरण ने ढँक दिया। गण-जाति और धन्धे-पेशे एक-दूसरे से जुड़े हुये पेश होने लगे। वैसे, एक ही पेशे में, एक ही धन्धे में अनेक गण-जाति, कई गण-जाति रहे। किसान जातियाँ...

समाज में होते व्यापक परिवर्तनों के संग धन्धों के महत्व बदलते रहे हैं। कल जो बहुत महत्वपूर्ण थे, आज वे गौण हो गये। उत्तम खेती और अधम नौकरी-चाकरी उलट-पलट गये हैं। एक समय किसी गण-जाति से जुड़ा जो पेशा-धन्धा श्रेष्ठ कहा जाता था वह अन्य समय में अधम की श्रेणी में आ गया।

और अन्त में, कुछ बात ऊँच-नीच की। ऊँच-नीच का सम्बन्ध वर्ण से है। समाज में स्वामी और दास बनने-बनाने के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप में वर्ण व्यवस्था की रचना द्वारा ऊँच-नीच को संस्थागत रूप देने के प्रयास हुये। हजारों गण-जाति ऊँच-नीच वाले चार खानों में फिट किये गये। कई गण-जाति जो इन चार खानों में से निचले में ठूँसे नहीं जा सके वो "बाहर-अन्य-दूसरे" करार दिये गये। परिवर्तन-आवश्यकता "बाहर" वालों को "अन्दर" लाये और शक्ति-सत्ता ने गण-जाति की वर्ण-श्रेणी में कई उलट-फेर किये। शुद्र शिवाजी का राजतिलक करने से इनकार.... सत्ता ने मराठों को शुद्र से क्षत्रिय की श्रेणी में पहुँचाया।

एक गण-जाति में अनेक प्रकार के विभाजनों द्वारा "नये" गण-जाति अस्तित्व में आते रहे। हिन्दू मनिहार और मुसलमान मनिहार, खटीक और बकरे काटने वाले खटीक। कह सकते हैं कि स्थान बदलने से, धर्म परिवर्तन से, नये धन्धे-पेशे अपनाने से गण-जाति वाले सामाजिक गठन में कुछ परिवर्तन तो आये ही परन्तु गण-गोत्र की जड़ पर चोट नहीं पड़ी। इधर व्यक्ति को इकाई बनाना विगत के सम्बन्धों के तानों-बानों पर प्रहार है, गण-जाति की जड़ पर भी चोट लगता है।

इच्छा-अनिच्छा से परे नये लोगों के संग आना सामान्य बनता जा रहा है। अकेलेपन, नये प्रकार के अकेलेपन ने पीड़ा में भारी वृद्धि की है। नये मेल-मिलापों के लिये तड़प और प्रयास बढ रहे हैं। नये समुदायों के उदय की वेला है।

दिल्ली से -

कर्टसी होण्डा बॉडी शॉप मजदूर : "15/16 डी एस आई डी सी ओखला फेज-2 स्थित लाली ऑटोमोबाइल्स में हम 40 मजदूरों की सुबह 9 से साँय 5½ की शिफ्ट है पर हमें जबरन 6½ तक रोकते हैं। एक घण्टे का कोई ओवर टाइम नहीं देते। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं। आधे मजदूरों को ई.एस.आई. के कच्चे कार्ड दिये हैं। पी.एफ. नम्बर नहीं बताया है।" **(बाकी पेज दो पर)**

डायमण्ड एक्सपोर्ट श्रमिक : " बी-59 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की

आज चीन में

आजकल विश्व-भर में चीन की बहुत चर्चा है। चाहे उद्योगपति हो या नेता, मजदूर हो या छात्र, चीन को लेकर उत्सुक्ता हम सब के मन में है। हम सब जानना चाहते हैं कि चीन में क्या हालात हैं। महज 50 सालों में चीन सरकार ने कैसे इतनी तरक्की कर ली कि आज वह अमरीका सरकार को चुनौती दे रही है। तीन महीने पहले मैं इसी कौतूहल के साथ चीन गया था। दो महीने वहाँ रहने और उनके साथ काम करके वहाँ के लोगों से मैंने बहुत कुछ जाना। अगले महीने से मैं अपने अनुभवों के बारे में लिखूँगा। – अ

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

स्टार वायर मजदूर : "21/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में तीन हजार से ज्यादा मजदूर और पाँच-छह सौ स्टाफ वाले हैं। मात्र 85 मजदूर स्थाई हैं। ठेकेदार 82 थे, अब 55 हैं और इनके जरिये रखे तीन हजार मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2300-2400 तथा ऑपरेटरों की 3510 रुपये – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। लोहे का काम है, चोटें हर समय लगती रहती हैं। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी जाती, कोई मुआवजा नहीं। चावला कॉलोनी से डॉ. पी.सी. गुप्ता फैक्ट्री में आते हैं और उन्हीं के यहाँ इलाज होता है। वाल्व स्टील विभाग में ही 10-12 मजदूरों के हाथ कटे हैं। महीने में 100 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। कैन्टीन में 5 रुपये में थाली, खाना सही नहीं। फैक्ट्री में सेना का काफी साजो-सामान बनता है।"

ईको ऑटो श्रमिक : " प्लॉट 20 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों को जुलाई की तनखा 3586 रुपये दी थी पर अगस्त माह की तनखा 22 सितम्बर को दी तो 3286 रुपये दी। कम्पनी कहती है कि अब घंण्टे के हिसाब से पैसे देगी। सप्ताह में 5 दिन काम होता है और सुबह 8 से साँय पौने छह की तथा रात 10 से अगले रोज सुबह 8 बजे तक की शिफ्ट हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को अगस्त की तनखा आज 23 सितम्बर तक नहीं दी है। कैजुअल वरकरों को दिये जाते 7 रुपये प्रतिदिन भोजन के और महीने में एक बट्टी साबुन बन्द करने के बाद यह तनखा कम करना आया है।"

बाटा कामगार : " 32 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 1968 में भर्ती हुआ तब 1600 से ज्यादा स्थाई मजदूर थे जो बढते-बढते 2600 हो गये थे। फिर कम होते-होते आज यहाँ 350 से कम स्थाई मजदूर बचे हैं। स्थाई मजदूरों की स्थिति इतनी कमजोर हो गई है कि एक दिन तबीयत खराब होने पर एक घण्टे का गेट पास माँगा तो पर्सनल विभाग ने नहीं दिया। जनरल मैनेजर अमर नन्दी से मिला तो साहब बोला, 'मैं आपके गेट पास के लिये यहाँ नहीं बैठा। चालीस की जगह अस्सी वर्ष की सर्विस हो तो भी हमें कोई मतलब नहीं है।' हालात यह हो गये हैं कि 40-42 वर्ष नौकरी करने के बाद सितम्बर में सेवानिवृत हुये तीन मजदूरों को कम्पनी ने दशहरे की मिठाई देने से इनकार कर दिया।"

टैक्नो ऑटो वरकर : "प्लॉट 31 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 9½ की शिफ्ट है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 17-18 स्थाई मजदूर और एक ठेकेदार के जरिये रखे 350 वरकर हैं। कैन्टीन नहीं है। चाय-मट्ठी और .... गाली देते हैं।"

रखेजा इंजिनियर्स मजदूर : " कृष्णा कॉलोनी, सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2400 और ऑपरेटरों की 3200-3300 रुपये। सितम्बर के आरम्भ में ई.एस.आई. जाँच दल आया तब 2-3 को छोड़ कर बाकी 80-85 मजदूरों को मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री के बाहर निकाल दिया। हमारी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। फैक्ट्री में जे सी बी का काम होता है।"

मल्टी टेक श्रमिक : " प्लॉट 3 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर 12 घण्टे की एक शिफ्ट में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 10-15 पुराने मजदूरों की ही। पावर प्रेस हैं – एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते और प्रायवेट में इलाज करवा कर निकाल देते हैं। हैल्परों की तनखा 2300 और ऑपरेटरों की 2500-3000 रुपये। जरूरत पड़ने पर कम्पनी 100-200 रुपये भी नहीं देती। मैनेजर गाली देता है।" **ग्रिप कामगार :** "मलेरना रोड़ स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर क्रेन बनाते हैं। ई.एस. आई. व पी.एफ. 10 की ही हैं। हैल्परों की तनखा 2500-3000 रुपये।" **एस पैन फ्युअल टैक्नोलॉजी मजदूर :** " 27/48 इन्डस्ट्रीयल एरिया (लक्ष्मी रतन कम्पलैक्स) स्थित फैक्ट्री में हम 40 मजदूर 12 घण्टे की एक शिफ्ट में सी एन जी किट बनाते हैं। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 2500 रुपये और ऑपरेटरों को 3000 से कम। ई.एस. आई. 10-12 की है और पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं।" **एस पी एल इन्डस्ट्रीज श्रमिक :** "प्लॉट 22 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12 सितम्बर को कार्य करते समय एक सिलाई कारीगर को बिजली का झटका लगा। मशीन में करन्ट। अलार्म बजाने पर कोई नहीं आया। इस पर सिलाई कारीगरों की सेक्युरिटी गार्डों से धक्का-मुक्की हुई। अगले रोज, 13 सितम्बर को सुबह-सुबह कार्यस्थल से मैनेजमेन्ट ने 3 वरकरों को गेट पर बुलाया। कम्पनी का स्टाफ गेट पर था और ग्रुप फोर सेक्युरिटी कम्पनी ने गाड़ी भर कर लोग बुला रखे थे। बाहर बुलाये तीन मजदूरों की पिटाई – एक का सिर फटा, एक का हाथ टूटा। पता लगते ही 1000 सिलाई कारीगर काम छोड़ कर फ़ैक्ट्री से बाहर आ गये। आज, 15 सितम्बर को भी सिलाई कारीगरों ने काम आरम्भ नहीं किया है, फैक्ट्री के बाहर हैं।"

ओमेगा ब्राइट स्टील कामगार : " प्लॉट 104 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2800 और ऑपरेटरों की 3000-3500 रुपये।"

ग्रीन लैब वरकर : " 13 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 25 स्थाई मजदूर और चार ठेकेदारों के जरिये रखे 200 वरकर काम करते हैं। ठेकेदार एच आई एस एस (दत्ता) के जरिये रखे 80 मजदूरों को कैजुअल वरकर कहते हैं। इनकी ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं और तनखा 3510 रुपये – जनवरी से देय डी.ए. के 76 रुपये नहीं दिये हैं। बाकी तीन ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, हैल्परों की तनखा 2000-2500 रुपये और 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।" **आर आर शीट मैटल मजदूर :** " प्लॉट 187 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे की एक शिफ्ट है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 110 मजदूर हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 18 की ही हैं। हैल्परों की तनखा 2400 और ऑपरेटरों की 2800-3000 रुपये।"

सेक्युरिटी गार्ड : " एन एच 5 में सलूजा पैट्रोल पम्प के पीछे कार्यालय वाली **कॉन्टिनेन्टल सेक्युरिटी** कम्पनी गार्डों से 12 घण्टे रोज ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। रोज 12 घण्टे ड्युटी पर 30 दिन के 3500 रुपये।" **भाई सुन्दरदास श्रमिक :** "21/1 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 10 घण्टे की एक शिफ्ट है। कैजुअल वरकरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और ठेकेदारों के जरिये रखों को सिंगल रेट से। कैजुअलों का छह महीने में ब्रेक कर देते हैं और भर्ती के लिये 500 रुपये रिश्वत लेते हैं तथा ओवर टाइम लगाने के लिये मुर्गा-दारू।" **अरिहन्त इंजिनियर्स कामगार :** "प्लॉट 88 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2200-2400 और कारीगरों की 2800-3000 रुपये। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी. एफ. 25-30 के ही हैं जबकि 250 मजदूर यहाँ काम करते हैं। अगस्त की तनखा 15 सितम्बर को दी।" **कालका इंजिनियरिंग वरकर :** "प्लॉट 248 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500-3000 रुपये। महीने में 70-80 घण्टे ओवर टाइम, पैसे सिंगल रेट से। कम्पनी ने स्वयं 3-4 मजदूर रखे हैं और ठेकेदारों के जरिये 150।"

दिल्ली से – (पेज एक का शेष)

तनखा 1600-1800 और चैकरों की 2400-2600 रुपये। महीने में 100 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. बहुत-ही कम मजदूरों के।" **एलोरा क्रियेशन कामगार :** " एफ 23/1 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2200-2300 रुपये। सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है और रात 2 बजे तक भी रोक लेते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।"

*डी ए के 50 रुपये जुड़ने के बाद **दिल्ली में** सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं : 8 घण्टे की ड्युटी और सप्ताह में एक छुट्टी पर महीने के अकुशल श्रमिक (हैल्पर) को 3683 रुपये (8 घण्टे के 142 रुपये); अर्ध-कुशल मजदूर की कम से कम तनखा 3849 रुपये (8 घण्टे के 148 रुपये); कुशल श्रमिक का कम से कम वेतन 4107 रुपये (8 घण्टे के 158 रुपये)।*

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी फरीदाबाद – 121001

गुड़गाँव में मजदूर

इनकास इन्टरनेशनल मजदूर : "प्लॉट 142 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 35 स्थाई मजदूर, 10-12 कैजुअल वरकर तथा ठेकेदारों के जरिये रखे 150 मजदूर चमड़े के थैले और जैकेट बनाते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. सिर्फ 35 स्थाई मजदूरों के हैं। कैजुअल तथा ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों में हैल्परों की तनखा 3000 रुपये। फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8 की शिफ्ट है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट। बोनस नहीं देते – दिवाली से कुछ पहले सादे कागजों पर हस्ताक्षर करवा कर निकाल देते हैं। जनरल मैनेजर गाली बहुत देता है।"

एस एण्ड आर एक्सपोर्ट श्रमिक : "प्लॉट 298 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की सुबह 9 से रात 8 तक की ड्युटी – 11 घण्टे प्रतिदिन पर महीने के 3510 रुपये देते हैं। इसी दौरान के लिये चेकरों को दो घण्टे ओवर टाइम देते हैं पर पैसे सिंगल रेट से। भोजन अवकाश के दौरान और छुट्टी होने उपरान्त 15-30 मिनट जबरन बोझे ढुआते हैं, गाली देते हैं और मना करने पर अगले रोज से फैक्ट्री नहीं आने की कहते हैं। भोजन अवकाश से एक घण्टा पहले कम्पनी गार्डों के जरिये पानी-पेशाब बन्द कर देती है। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने, निकालने पर मजदूर को फण्ड के पैसे नहीं मिलते।"

अचीवर लिमिटेड कामगार : "उद्योग विहार फेज-3 में प्लॉट 471 और 501 में कम्पनी की फैक्ट्रियाँ हैं। एक से दूसरी फैक्ट्री में भेजते रहते हैं और गड़बड़ी कर महीने में 2-3 हाजरी खा जाते हैं। सुबह 9 से रात 7½ तक रोज ड्युटी है और इस दौरान के लिये कोई ओवर टाइम नहीं। रात 7½ के बाद रात 2 बजे तक रोकते हैं तब उसे ओवर टाइम कहते हैं और यह भी महीने में 70-80 घण्टे हो जाता है, भुगतान सिंगल रेट से। हैल्परों को 10½ घण्टे की ड्युटी पर महीने के 3500 रुपये। वर्ष में 9 महीने से कम काम करने पर बोनस नहीं देते। छह-सात सौ मजदूर हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 100 से भी कम की हैं। यहाँ कोई ठेकेदार नहीं है।"

लक्ष्मी इम्प्राइड्री वरकर : "प्लॉट बी-35 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के हैल्परों को 2000-2200 और ऑपरेटरों को 3800-4200 रुपये। अगस्त की तनखा 15 सितम्बर को दी। पचास मजदूर हैं, ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी की नहीं। गाली व मारपीट हैं।"

सेक्युरिटी गार्ड : "महिपालपुर में कार्यालय वाली **ट्रैग सेक्युरिटी** गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक अवकाश नहीं। रोज 12 घण्टे, महीने के तीसों दिन ड्युटी के बदले 4300 रुपये देते हैं। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे निकालने का फार्म नहीं भरते।"

ऋचा ग्लोबल मजदूर : "प्लॉट 232 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 100 से कम स्थाई मजदूर, 1800 के करीब कैजुअल वरकर और आठ ठेकेदारों के जरिये रखे 650 मजदूर काम करते हैं। फिनिशिंग विभाग में रात 7 से अगले रोज सुबह 4½ तक काम करने वाले 50-60 मजदूरों को छोड़ कर बाकी सब के ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन सब वरकरों को। कैजुअल वरकरों से इस्तीफे लिखवाते हैं और काम करते 8 महीने होने से पहले निकाल देते हैं। महीने में 100-125 घण्टे ओवर टाइम। रविवार के ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को अन्य दिनों के ओवर टाइम का भुगतान भी सिंगल रेट से पर कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती को दिन के 2 घण्टे ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से और बाकी समय के सिंगल रेट से। रात 2 बजे तक रोकते हैं और ओवर टाइम करने से मना करने पर नौकरी से निकाल देते हैं। छुट्टी देते ही नहीं और एक दिन छुट्टी करने पर एक दिन वापस भेज देते हैं। पाँच मिनट की देरी पर लौटा देते हैं। कैन्टीन में भोजन ठीक है। लैट्रीन साफ रहती हैं। बोनस देते हैं। गाली बहुत देते हैं.... हर घण्टे का उत्पादन लिखते हैं, निर्धारित उत्पादन बढाते रहते हैं – ठेकेदारों के जरिये रखे सिलाई कारीगर पीस रेट पर। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती को तनखा 7 से 9 तक और ठेकेदारों के जरिये रखों को 15 तारीख को।"

ग्राफ्टी एक्सपोर्ट श्रमिक : "प्लॉट 377 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को सुबह 9½ से रात 8 तक ड्युटी पर महीने के 3586 रुपये – कोई ओवर टाइम नहीं। सैम्पलिंग विभाग में ओवर टाइम देते हैं पर सिंगल रेट से और वह भी देरी से। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं। ई.एस.आई. का कच्चा कार्ड देते हैं पर नौकरी छोड़ने पर फार्म नहीं भर रहे, मजदूर को पी.एफ. के पैसे नहीं मिलते।"

शिवम् इम्प्राइड्री कामगार : "प्लॉट डी-64 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। एक दिन छुट्टी करने पर दो दिन के पैसे काट लेते हैं। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के हैल्परों को 2500 और ऑपरेटरों को 3500-4200 रुपये। अगस्त की तनखा 17 सितम्बर को दी। ई.एस.आई. व पी.एफ. के तनखा से 300-500 रुपये काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे निकालने का फार्म नहीं भरते। गाली और मारपीट – तनखा बढाने की कहने पर 27 सितम्बर को एक इलेक्ट्रिशियन को थप्पड़, लात, घूँसे मार कर निकाल दिया।"

ईस्टर्न मेडिकिट वरकर : "उद्योग विहार फेज-1 में प्लॉट 195, 196, 205, 206, 207 तथा फेज-2 में प्लॉट 292 स्थित फैक्ट्रियों में कम्पनी स्थाई मजदूरों को समय पर तनखा देती है और कैजुअल वरकरों को देरी से – अगस्त की 15 सितम्बर को दी। और, दस हजार रुपये से कम तनखा वाले लोअर स्टाफ को तो अगस्त की तनखा आज 30 सितम्बर तक नहीं दी है। लोअर स्टाफ को बोनस नहीं। दिवाली पर स्थाई मजदूरों को उपहार पर कैजुअल वरकरों को नहीं, लोअर स्टाफ को भी उपहार नहीं।"

सरगम एक्सपोर्ट मजदूर : "कम्पनी की उद्योग विहार में प्लॉट 153 व 210 फेज-1, प्लॉट 124 फेज-4, प्लॉट 540 फेज-5 स्थित फैक्ट्रियों में साप्ताहिक अवकाश किसी महीने में बुधवार को तो किसी महीने में रविवार को। महीने में 5 रविवार और 4 बुधवार हैं तो साप्ताहिक अवकाश बुधवार को, महीने में 5 बुधवार हैं तो अवकाश रविवार को। पहले नहीं बताते और फैक्ट्री पहुँचने पर काम नहीं है कह कर वापस भेज देते हैं। पन्द्रह दिन की ब्रेक कर देते हैं।"

गौरव इन्टरनेशनल श्रमिक : "प्लॉट 198 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में फिनिशिंग विभाग में ठेकेदार के जरिये रखते 100 मजदूरों को बायर आने के समय बाहर निकाल देते हैं। प्रेसमैन की तनखा 3500 और हैण्ड वर्किंग तथा धागा कटिंग वालों की 3000 रुपये। प्रेसमैन तथा हैण्ड वर्किंग वालों की तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और निकालने-छोड़ने पर फण्ड निकालने का फार्म नहीं भरते। ड्युटी सुबह 9½ आरम्भ होती है और छूटने का कोई समय नहीं है – रात के 2 भी बज जाते हैं। महीने में 100 घण्टे ओवर टाइम के जिनमें से 20 घण्टे खा जाते हैं और बाकी का भुगतान सिंगल रेट से।"

आर. आर. खन्ना एक्सपोर्ट कामगार : "प्लॉट 289 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2400 और कारीगरों की 3200 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 150 मजदूरों में किसी के नहीं – सिर्फ स्टाफ वालों के हैं।"

ऋचा एण्ड कम्पनी वरकर : "प्लॉट 239 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में साहब लोग गाली बहुत देते हैं। तीन मंजिला फैक्ट्री में हजारों मजदूर काम करते हैं। कैंटीन में 15 रुपये में थाली से पेट नहीं भरता। चाय मिलती ही नहीं। महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम – 2 घण्टे रोज के पैसे दुगुनी दर से और बाकी के सिंगल रेट से। धागे काटने के लिये ठेकेदारों के जरिये रखे 100-150 मजदूरों की तनखा 2400-2500 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। लैट्रीन कम हैं, गन्दी रहती हैं। बायर की आडिट सुश्री सीमा के पूछने पर, सच्चाई बताने के लिये कम्पनी ने 4 मजदूर निकाल दिये।"

इनस्टाइल मजदूर : "प्लॉट 140 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में गाली बहुत देते हैं। अगस्त की तनखा 26 सितम्बर को दी। फैक्ट्री में काम करते 200 मजदूरों में से 100 को दो ठेकेदारों के जरिये रखा है। चैकिंग वाले 50 को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन परन्तु धुलाई, प्रेस, धागे काटने वाले 50 मजदूरों की तनखा 1800 रुपये।"

रोमानिया में मजदूर

अधिक वेतन के लिये रोमानिया में जन्मे मजदूर यूरोप के अन्य क्षेत्रों में जा रहे हैं। बड़ी सँख्या में लोग स्पेन और इटली जा रहे हैं। दस प्रतिशत रोमानियाई नागरिक यूरोप के अन्य क्षेत्रों में काम कर रहे हैं।

रोमानिया में कार्यरत 73 प्रतिशत कम्पनियाँ मजदूरों की कमी का रोना रो रही हैं। मीडिया लोगों के बाहर जाने के दुष्प्रभावों के दैनिक प्रचार में जुटा है। "बाहर" बदतर होती कार्यस्थितियों, पीछे रह जाते परिजनों के लिये सामाजिक हादसे, एशिया से मजदूरों की बाढ आने के खतरे की बातें रोमानिया में टी वी-समाचार पत्रों-पत्रिकाओं की मुखर सामग्री बने हैं।

चीन, फिलिपीन्स, बंगलादेश, भारत से मजदूर लाये जाने लगे हैं। अभी यह प्रयोग के स्तर पर है। और, रोमानिया में मजदूरों के नये रंग-रूप हलचलों को नये आयाम प्रदान कर रहे हैं।

✱ जनवरी 07 की बात है। वीयर कम्पनी द्वारा चीन से लाई गई 400 महिला मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। सिलाई कारीगरों ने यह कदम वेतन वृद्धि और बेहतर कार्यस्थितियों के लिये उठाया था। हड़काने पहुँचे डायरेक्टर को मजदूरों ने घेर लिया। डायरेक्टर के शब्द : " कार्य करने की बजाय वे भोजन करने वाले छुरी-काँटों से मुझ पर पिल पड़ी। मैंने पुलिस और सेक्युरिटी बुलाई। मेरे अपने देश में, मेरी अपनी फैक्ट्री में, जिन्हें मैंने सब रियायतें दी हैं उन महिला मजदूरों का आक्रमण बिलकुल स्वीकार्य नहीं है !"

✱ फिलिपीन्स में एक एजेन्सी ने 26 से 52 वर्ष आयु वाली महिला सिलाई कारीगर रोमानिया में काम करने के लिये मई 08 में भर्ती की। फीस और यात्रा के एक लाख रुपये हर मजदूर से लिये।

तनखा 16-17 हजार रुपये और दुगुनी दर से ओवर टाइम बताया गया था। पहले महीने में मजदूरों ने 33-34 हजार रुपये का काम किया। परन्तु भोजन व निवास का खर्च काट कर उन्हें मात्र 9-10 हजार रुपये दिये गये। दूसरे महीने भी यही बात। इन महिला मजदूरों में से कई नामिबिया, ताइवान, ब्रुनेई में फैक्ट्रियों में काम कर चुकी थी। रोमानिया में यह सप्ताह में 6 दिन सुबह 6½ से साँय 6 तक काम कर रही थी। कम्पनी ओवर टाइम के पैसे दे ही नहीं रही थी ! एक कमरे में 8 रहती थी और भोजन बहुत खराब था। नाश्ता, दोपहर का भोजन और कमरे का किराया मिला कर 7 हजार रुपये के। रात के भोजन का प्रबन्ध मजदूरों द्वारा स्वयं। तीसरे महीने में फिलिपीन्स से लाई गई महिला मजदूरों ने ओवर टाइम बन्द कर दिया। जगह-जगह शिकायतें की। बौखलाई मैनेजमेन्ट ने 6 मजदूरों को रोमानिया से निष्कासित करवाया। फिलिपीन्स से रोमानिया में फैक्ट्री में काम करने लाई गई महिला मजदूरों का विरोध जारी है। कम्पनी ने मजदूरों से पार पाने के लिये पीस रेट आरम्भ किया है – 250 के स्थान पर 500 पीस निर्धारित किया है !

✱ भारत से मई 07 में 43 मजदूर रोमानिया में एक धातु फैक्ट्री में काम करने के लिये ले जाये गये। समझौता 10 घण्टे रोज और सप्ताह में 6 दिन काम पर कर-पूर्व 23-24 हजार रुपये प्रतिमाह का था। लेकिन कम्पनी हफ्ते में 60 घण्टे की जगह 115-130 घण्टे काम लेने लगी। मजदूरों को नाम की जगह नम्बर दे दिये गये और नम्बर से बुलाये जाते। भारत से रोमानिया में काम करने गये मजदूरों ने इस सब का विरोध किया। जगह-जगह शिकायतें करने के बाद इन मजदूरों ने अक्टूबर 07 में मीडिया के लिये खुला पत्र जारी किया। कम्पनी मानसिक यन्त्रणा पर उतर आई। और फिर, जनवरी 08 के आरम्भ में कम्पनी ने 30 मज़दूरों को नौकरी से निकाल दिया। कम्पनी ने आरोप लगाया कि यह मजदूर 20 दिसम्बर 07 से कार्य के लिये नहीं पहुँचे थे..... जबकि इस दौरान छुट्टियों में फैक्ट्री बन्द थी !

✱ बंगलादेश से 500 सिलाई कारीगर रोमानिया में काम करने भेजे गये। फीस और यात्रा के डेढ लाख रुपये प्रत्येक मजदूर से एजेन्सी ने लिये।

सप्ताह में 40 घण्टे कार्य पर महीने में 16-17 हजार रुपये और ओवर टाइम दुगुनी दर से की बात थी। बंगलादेश से रोमानिया पहुँचे मजदूरों ने सप्ताह में 60 घण्टे काम किया। प्रत्येक मजदूर के 33-34 हजार रुपये महीने में बने पर कम्पनी ने मात्र 9-10 हजार रुपये दिये। ओवर टाइम के पैसे कम्पनी ने दिये ही नहीं और भोजन व निवास के 6 हजार रुपये काट लिये। एक कमरे में 9 लोग त्रिस्तरीय चारपाइयों पर सोते हैं और भोजन से पेट नहीं भरता। यह मजदूर पहली बार बंगलादेश से बाहर निकले थे – अनेक तरीकों से कम्पनी का विरोध आरम्भ किया। कम्पनी हर समय धमकी देती : वापस बंगलादेश ! निवास फैक्ट्री के अन्दर था और यह-वह डर दिखा कर कम्पनी बाहर नहीं जाने देती। इन सिलाई कारीगरों ने बंगलादेश से रोमानिया आ कर निर्माण कार्य में लगे मजदूरों से तालमेल बैठाया। स्थानीय लोंगों के बीच बातें पहुँची और उनकी सहानुभूति मिली। दो महीने फैक्ट्री में बन्द रखने के बाद रविवार को छुट्टी के दिन कम्पनी को इन्हें शहर में घूमने जाने देना पड़ा। कम्पनी की समस्या यह भी है कि बाहर निकले मजदूरों में से कई अन्य जगह चले जाते हैं। इसलिये बन्द रखो ! बाहर से लाये जाते मजदूर पाबन्दियों को धता बता कर मौका मिलते ही रोमानिया से यूरोप के अन्य देशों में चले जाते हैं। कम्पनी पासपोर्ट और अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज अपने पास रखती है फिर भी..... (सम्पर्क के लिये

< ana.cosel@web.de > और

< antoniamautempo@gmx.net >)

डेंगु का धन्धा

डेंगु एक वायरल बीमारी है। यह एडीज मच्छरों के जरिये फैलती है।

डेंगु होने पर 80 प्रतिशत मामलों में सामान्य-सा बुखार होता है। किसी प्रकार के उपचार की आवश्यकता नहीं होती। ताप कम करने के लिये शरीर पर ठण्डी पट्टियों की जरूरत पड़ती है। यदि बुखार ठण्डी पट्टियों से नियन्त्रण में नहीं आये तो पैरासिटामोल की गोली लाभदायक होती है।

डेंगु होने पर कुछ रोगियों को बुखार के संग शरीर पर लाल चकत्ते दिखने लगते हैं। शरीर ठण्डा होता है और रक्तचाप भी थोड़ा कम हो जाता है। डेंगु के इस प्रकार के मरीज 18 प्रतिशत के करीब होते हैं। इन मामलों में भी किसी प्रकार के इलाज की आवश्यकता नहीं होती। ठण्डी पट्टियाँ और जरूरी होने पर पैरासिटामोल की गोली पर्याप्त हैं। हाँ, ऐसे रोगियों को रक्त में प्लेटलेट की गिनती करवा लेनी चाहिये।

डेंगु के 98 प्रतिशंत मामलों में किसी प्रकार के उपचार की आवश्यकता नहीं होती।

मात्र 2 प्रतिशत मामलों में डेंगु भयानक रूप लेता है। रक्त में खून को जमाने वाले जो कण (प्लेटलेट) होते हैं उनकी बहुत-ही कमी हो जाती है। मरीज के मुँह, नाक इत्यादि से खून रिसने लगता है। कुछ रोगियों में रक्तचाप 90 एमएम से भी कम हो जाता है। शरीर की क्रियायें धीमी पड़ जाती हैं। रक्त रिसने वाले और ब्लड प्रेशर लगातार गिरने वाले मरीज को अस्पताल में दाखिल करने की आवश्यकता होती है। यह रोगी भी लगातार देखभाल से ठीक हो जाते हैं। सरकारी अस्पतालों के लिये रक्त से प्लेटलेट अलग करने की मशीन रखना आसान है।

..... डेंगु का मौसम आते ही निजी चिकित्सालयों में खुशी की लहर दौड़ जाती है। ना चलने वाले प्रायवेट अस्पतालों में भी दाखिले के लिये बिस्तर मिलना मुश्किल हो जाता है। बुखार के हर मरीज को डेंगु सम्भावित की श्रेणी में रखा जाता है। सरकारी तन्त्र जहाँ डेंगु होने पर भी "डेंगु नहीं" कहता है वहीं निजी चिकित्सक सामान्य डेंगु को भी भयानक डेंगु की श्रेणी में रखते हैं। दो प्रतिशत को अस्पताल में भर्ती की आवश्यकता होती है, सौ प्रतिशत को भर्ती किया जाता है। दो प्रतिशत को जिस उपचार की जरूरत होती है वह उपचार सौ प्रतिशत पर लागू किया जाता है। डेंगु के 98 प्रतिशत रोगी कटने वाले मुर्गे बनते हैं। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2006 में निजी चिकित्सकों/प्रायवेट अस्पतालों ने डेंगु से फरीदाबाद में ही 50 करोड़ रुपये का व्यवसाय किया। एक करोड़ में जो हो जाये उसे 50 करोड़ में करना अच्छा धन्धा है।

डेंगु को रोकने का सरल उपाय एडीज मच्छरों को अपने इर्द-गिर्द पैदा नहीं होने देना है। पानी को ढक कर रखना और तालाबों में एडीज मच्छरों के लारवा को खा जाने वाली मछलियाँ रखना पर्याप्त हैं। मच्छरों को मारने वाली दवाईयों का प्रयोग अन्य नुकसान संग लिये होता है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011